(P) ISSN : 2231-0045
(E) ISSN : 2349-9435

BI-LINGUAL QUARTERLY
RNI No. : UPBIL/2012/55438

VOL- VII * ISSUE- IV (Part-1)* May - 2019

Periodic Research

Multi-disciplinary Peer Reviewed International Research Journal

Indexed-with Google scholar

Indexed-with ROAD Directory of Open Access Scholarly Resources

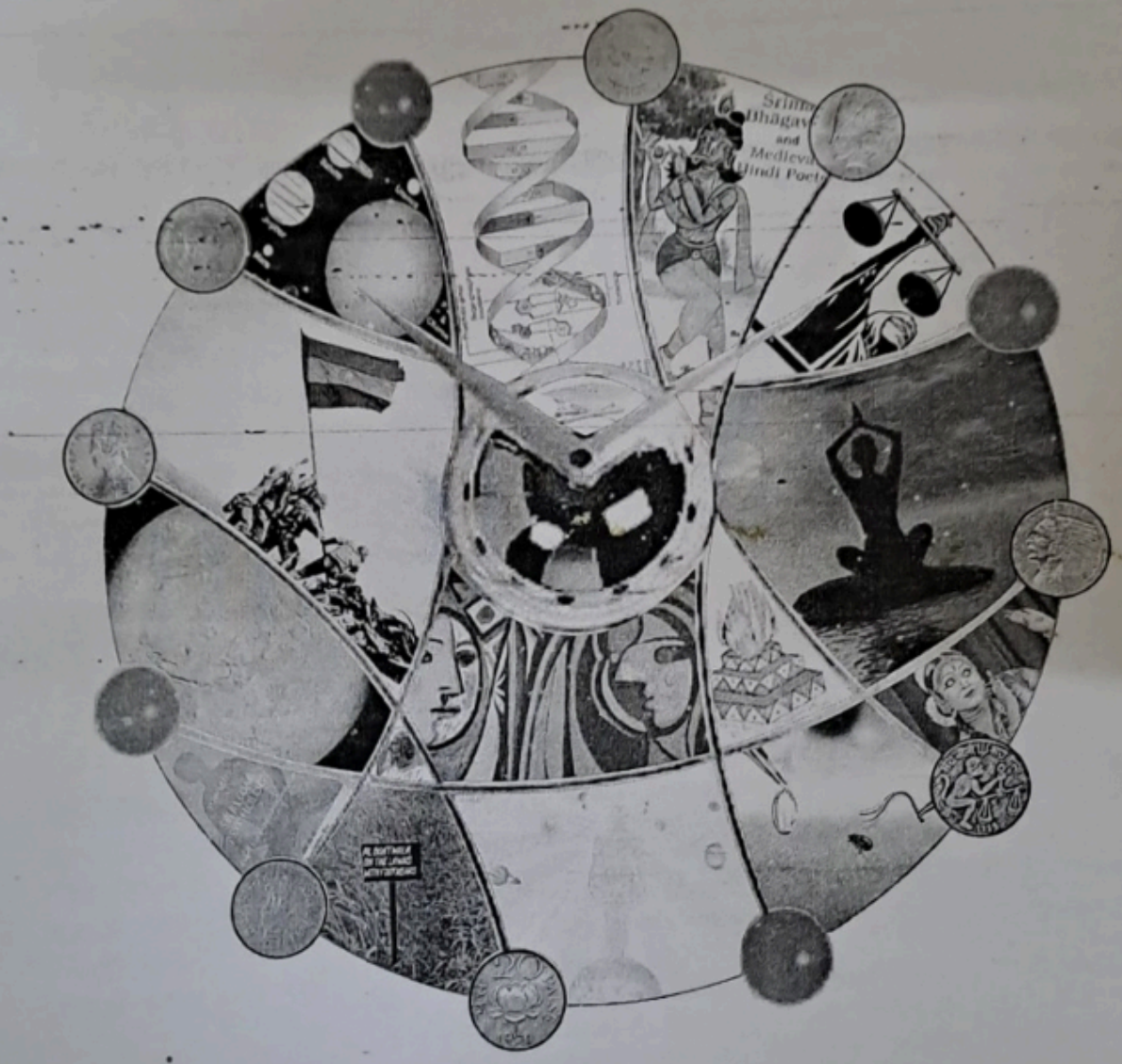

Impact Factor

SJIF = 6.210
evaluated by
Scientific Journal Impact Factor

UGC LISTED JOURNAL

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-7, ISSUE-4 (Part-1) May-2019
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

सामान्य वर्ग एवं अनुसूचित वर्ग के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन

रश्मि गोरे
असिस्टेण्ट प्रोफेसर,
शिक्षा विभाग,
छत्रपति शाहू जी महाराज
विश्वविद्यालय,
कानपुर, भारत

शिव नारायण
शोध छात्र,
शिक्षा विभाग,
छत्रपति शाहू जी महाराज
विश्वविद्यालय,
कानपुर, भारत

सारांश

बुद्धि के कारण ही मानव अन्य प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ सिद्ध हो सका है, और उसने आदिम युग से जेट युग की यात्रा सफलतापूर्वक सपन्न की है। सांवेगिक बुद्धि व्यक्ति को निर्णय लेने, समायोजन करने तथा सवेगों के निर्णयन के रूप में जानी जाती है। सांवेगिक बुद्धि व्यक्तियों के सवेगों को जानने एव लक्ष्य प्राप्त करने में सहायक होता है। अतः सांवेगिक बुद्धि का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा द्वारा विद्यार्थियों की शारीरिक, मानसिक, सांवेगिक, सामाजिक, गामक एवं चारित्रिक आदि शक्तियों का विकास करने के लिए विशिष्ट प्रयत्न किये जाते है। भारतीय समाज विभिन्न जातियो धर्मो, बोलियों एवं संस्कतियों का देश है। भारत में अनुसूचित जाति वर्ग एक लम्बे समय तक शोषण का शिकार रही है, किन्तु स्वतन्त्र भारत में सविधान में उसके अधिकारों की रक्षा की गयी है तथा उनके विकास हेतु विशेष प्रावधान किये गये है। स्वतंत्रता के बाद से आज तक सरकार के विशिष्ट प्रावधानों से अनुसूचित जाति के बालकों के विकास हेतु लगातार प्रयास किये जा रहे है। निःशुल्क शिक्षा, रेजगार तथा उच्च शिक्षा में आरक्षण, शैक्षिक छात्रवृत्तियां इत्यादि इसके उदाहरण है। 72 वर्ष के विकास के पर्यावरण ने अनुसूचित जाति के बालकों के गुणों एवं सामर्थ्य को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया है। अतः शोधार्थी के मन में यह प्रश्न उत्पन्न हुआ कि क्या सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों तथा अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि में अन्तर है? क्या सामान्य वर्ग की छात्र–छात्राओं तथा अनुसूचित जाति वर्ग के छात्र–छात्राओं की सांवेगिक बुद्धि में भिन्नता है? इस जिज्ञासा का शमन करने हेतु प्रस्तुत शोध अध्ययन में 100 सामान्य तथा अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं को न्यादर्श के रूप में लिया तथा निष्कर्ष में पाया कि सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि से अधिक है। शोध परिणामों से स्पष्ट है कि सांवेगिक बुद्धि का प्रभाव उनकी विभिन्न प्रकार की रूचियों अभिवृत्तियों, कार्यक्षमताओं एवं आकांक्षाओं आदि पर पडता है। सांवेगिक बुद्धि व्यक्तिगत क्षमताओं की कुंजी है। विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि के स्तर का ज्ञान हो जाने पर छात्रों को शैक्षिक, वैयक्तिक एवं कैरियर सम्बन्धी समस्याओं के समाधान के लिए सही तरीके से निर्देशन एवं परामर्श प्रदान किया जा सकता है। जिससे छात्रों के आत्म विश्वास में वृद्धि होगी तथा विद्यार्थियों के कुण्ठा, तनाव एवं अवसाद को दूर किया जा सकता है, इस प्रकार से विद्यार्थियों के सुसमायोजित व्यक्तित्व का निर्माण हो सकेगा, जिससे सुसंगत समाज के निर्माण को दिशा नई मिलेगी। इस प्रकार स्नातक स्तर के विद्यार्थी की सांवेगिक बुद्धि के सन्तुलित विकास से उनके व्यक्तित्व का विकास एवं निर्णय लेने की क्षमता एवं कौशल दक्षता का विकास होगा।

मुख्य शब्द : स्नातक स्तर के विद्यार्थी, सामान्य वर्ग एवं अनुसूचित वर्ग एव सांवेगिक बुद्धि।

प्रस्तावना

किसी भी समाज के सामाजिक, आर्थिक स्तर को शिक्षा व्यापक रूप से प्रभावित करती है। यदि कोई समाज विकास की धारा में पीछे रह जाता है, तो इसका मूलभूत कारण उस समाज का अशिक्षित होना है। माता–पिता अपने बालकों को शैक्षिक वातावरण नही दे पाते है, और शिक्षा के दूरगामी परिणामों को न जानने के कारण वे उन्हे अपनी आजीविका प्राप्त करने में संलग्न कर देते है तथा बच्चों को उनके शैक्षिक अधिकारों से वंचित कर देते है। परिणामतः उनका उचित सामाजिक एवं मानसिक विकास नही हो पाता है। आज के समय की लोकतांत्रिक एवं समाजवादी सरकारों का एक मुख्य उत्तरदायित्व समाज के दबे–कुचलें, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति से कमजोर वर्ग हेतु कल्याणकारी